E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
IJAAS 2019; 1(2): 105-107
Received: 25-08-2019
Accepted: 28-09-2019

सुजाता कुमारी
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
सुजाता कुमारी
पूर्व शोधार्थी, विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि

सुजाता कुमारी

सारांश
मानव जीवन में राष्ट्रवाद की भूमिका के निर्णायक महत्त्व के कारण संमार में कुछ सर्वश्रेष्ठ चिंतकों ने, पिछले वर्षों में राष्ट्रवाद को अपने अन्वेषण और अध्ययन का विशिष्ट क्षेत्र बनाया है। राष्ट्र किन तत्त्वों से बना है, किन सामाजिक ऐतिहासिक स्थितियों में राष्ट्र का उद्भव हुआ, मानव प्रगति की दिशा में राष्ट्रवाद का क्या अनुदान है, मानव वे अन्तर्राष्ट्रीय एवं विश्वजनीन एकीकरण की आकांक्षा से इसका क्या संबंध है, इन सारी समस्याओं के विवेचन और समाधान की चेष्टा हुई है।
सामाजिक आर्थिक राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रो में राष्ट्रवादी भावनाओं के प्रतिफलन और उनकी अभिव्यक्ति की मीमांसा की गई है। विद्वानों ने विभिन देशों में राष्ट्रवाद के उद्भव और प्रसार का अध्ययन किया है और अलग–अलग देशों में इसके विकास के आनुवंशिक कारकों की गवेषणा की है, जिसे समझने की कोशिश की है। राष्ट्रवाद पर लिखा गया अभिनव साहित्य राष्ट्रों के रूप निरूपण की जटिल बहुविध प्रक्रिया, उनके लक्षण, संघर्ष और आत्माभिव्यक्ति की रीति आदि विभिन्न विषयों पर प्रचुर प्रकाश डालता है। प्रत्येक देश में राष्ट्रवाद का अपना विशिष्ट, अनन्य रूप है। अतः किसी भी देश की राष्ट्रीयता का अध्ययन अपने आप में पृथक् कार्य है।

कुटशब्दः भारतीय राष्ट्रवाद, सामाजिक पृष्ठभूमि, राष्ट्रवाद

प्रस्तावना
सामाजिक तथ्यों की तरह राष्ट्रवाद भी ऐतिहासिक तथ्य है। लोकजीवन के विकास क्रम में वस्तुनिष्ठ और भावनिष्ठ दोनों प्रकार के ऐतिहासिक तत्त्वों की परिपक्वता के पश्चात् राष्ट्रवाद का उदभव हुआ। जैसा कि ई० एच० कार ने लिखा है– 'सही अर्थो मे राष्ट्रों का उदय मध्ययुग की समाप्ति पर ही हुआ।'
व्यापक राष्ट्रीयता के आधार पर समाज, राज्य और संस्कृति के उद्भव से पूर्व संसार के विभिन्न भागों का जन–जीवन, मोटे तौर पर इन स्थितियों से गुजरे कबीलों की जिंदगी, दास–प्रथा सामंतवाद कह सकते हैं। सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के आधर पर राष्ट्रवाद का जन्म हुआ।
सामाजिक अस्तित्व के पूर्ववर्ती काल के अराष्ट्रिय जन–समुदाय से आधुनिक युग के राष्ट्र अपने निम्नलिखित गुणों के कारण भिन्न हैं, राष्ट्र के सारे सदस्य किसी निश्चित भूभाग में एक ही अर्थतन्त्र के अन्तर्गत परस्पर जैविकरूप से सम्पृक्त होते हैं, जिसके फलस्वरूप उनमें सम्मिलित आर्थिक अस्तित्व का भाव होता है, वे प्रायः एक ही भाषा का प्रयोग करते हैं, उनकी एक–सी मनोवैज्ञानिक संरचना और उससे विकसित सार्वजनिक लोक–संस्कृति होती है। ऐसा आदर्श राष्ट्र जो पूर्णतः विकसित हो और जिसमें ये सब गुण विद्यमान हों भावात्मक कल्पना मात्र है, क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र के अर्थतन्त्र सामाजिक संगठन, चिंतन प्रकृति और सम्मृति में अतीत के तत्त्व विभिन्न अंशो में उत्तरजीवी रहे हैं। फिर भी सोलहवीं सदी से ही मानव इतिहास के विशाल रंगमंच पर राष्ट्रगत सम्मेलन को विभिन्न अवस्थाओं में राष्ट्रीय जन–समुदायों का आविर्भाव होता रहा है।
ई० एच० कार द्वारा दी गई राष्ट्र की परिभाषा जो विशिष्ट गुण किसी राष्ट्र को अराष्ट्रिय जन–समुदायों से पृथक् करते हैं, उनके बारे में ई० एच० कार ने कहा है– 'राष्ट्र शब्द से जैस मानव समूह का बोध होता है उसके लक्षण हैं–

1. अतीत और वर्तमान में वास्तविकता अथवा भविष्य के लिए आकांक्षा के रूप में संघनिष्ठ सरकार की धारणा,
2. अपना अलग विशिष्ट आकार और सदस्यों का पारस्परिक संपृक्त सामीप्य,
3. न्यूनाधिक निर्धारित भूभाग,
4. ऐसी चरित्रगत विशेषताएँ (भाषा इनमें सर्वाधिक बहुल है) जो किसी राष्ट्र को अन्य राष्ट्रों और अराष्ट्रिय समुदायों से अलग करती है,
5. सदस्यों के सम्मिलित स्वार्थ,
6. सदस्यों के मन में राष्ट्र की जो छवि है उससे संबंधित समवेत भाव या इच्छाशक्ति।'

विभिन्न देशों में राष्ट्रवाद का विकास

राष्ट्रों के रूप में जन–समुदाय का एकीकरण दीर्घकालीन ऐतिहासिक प्रक्रिया की परिणति है। अपनी प्रगति को अवरुद्ध करने वाले अनकानेक विघ्न–बाधाओं के विरुद्ध नवजात राष्ट्रों को संघर्ष करना पड़ा। उदाहरणार्थ इंग्लैण्ड में सामंतवादी राज्य–व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई हुई। यह राज्यतंत्र एक ऐसी अर्थव्यवस्था का सर्मथक और पोषक था जिसके कारण लोग आर्थिक तौर पर एक दूसरे से अलग रहे और आर्थिक समन्वय के मूल उत्तोलक उद्योग एवं व्यापार की प्रगति अवरुद्ध रही।

आर्थिक और सामाजिक अलगाव पर आधारित सामंती समाज और राज्य को पवित्रता प्रदान करनेवाल रामन चर्च की सत्ता के विरुद्ध भी नवजात राष्ट्र इंग्लैण्ड को घोर संघर्ष करना पड़ा और राष्ट्रीय प्रोटेस्टेंट चर्च की स्थापना हुई, सुधारवादी एव क्रांतिकारी दोनों प्रकार के दीर्घकालीन राजनीतिक संघों के बाद ही सामंती राज्य की जगह राष्ट्रवादी राज्य को प्रतिष्ठापित किया जा सका। राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक जीवन, अर्थव्यवस्था और संस्कृति को और अधिक सुसंगठित करन के लिए अंग्रेजों ने इस नई राज्यव्यवस्था का भरपूर उपयोग भी किया।

इंग्लैण्ड में राष्ट्रवाद का जन्म अन्य अनेक देशों से पहले हुआ। यहाँ पर अन्य देशों की तुलना में व्यापार और उद्योग का विकास पहले हुआ। जिसके फलस्वरूप लोग विनिमय व्यापार से अधिकाधिक बचत करने लगे। इस तरह राष्ट्रीय अर्थतंत्र के विकास का रास्ता साफ हुआ और गणतांत्रिक एवं राष्ट्रवादी विचारों का उदय हुआ जिन्होंने राज्य, समाज और व्यक्ति के पद और प्रतिष्ठा संबंधी सामंती सिद्धान्तों पर आघात किया।

कालक्रम से आंतरिक एवं बाहरी शक्तियों के फलस्वरूप अन्य देशों में भी राष्ट्रवाद के उदय के ऐतिहासिक कारण परिपक्व हुए। प्रत्येक देश मे राष्ट्रवाद का विकास अलग अलग रास्ता से हुआ। किस देश ने कौन सा रास्ता अपनाया, यह उस देश के सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास, राजनीतिक और आर्थिक संरचना के अतीतकालीन अवशेष और उन देशों में राष्ट्रीय आंदोलन की अगुआई करने वाले वर्गों की विशिष्ट भावधारा द्वारा निश्चित हुआ। प्रत्येक राष्ट्र का जन्म और विकास अपने आप में अद्वितीय रहा है।

सत्रहवीं, अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों में ससार के अधिकाधिक क्षेत्रों में राष्ट्रों का निर्माण हुआ तथा पूर्ण विकसित होने के लिए नवजात राष्ट्र भीतरी और बाहरी अवरोधों के विरुद्ध संघर्षशील रहे, और आत्मरक्षा एवं आत्मविवर्धन के लिए राष्ट्रों के बीच घमासान लड़ाईयाँ लड़ी गई।

राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया बीसवीं सदी में भी जारी रही, जब एशिया, अफ्रीका और अन्य गैर यूरोपीय महादेशों के नवजागृत लोकसमुदायों ने स्वाधीन राष्ट्र के रूप में अपने विकास के रास्ते में देशी सामंतवाद और विदेशी साम्राज्यवाद द्वारा लाई गई रुकावटों को दूर करने के लिए आंदोलन किए। राष्ट्रीय आधार पर आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन के स्वतंत्र और अनवरुद्ध विकास की लालसा इन आंदोलनों के रूप मे प्रतिफलित हुई। एशिया ही नहीं, यूरोप में भी, प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति पर बहुत सारी राष्ट्र–जातियों ने अपनी स्वाधीनता के लिए संघर्ष किए। जैसे, मगयार, हगरियन, चेक आदि जातियों ने बहुराष्ट्रीय आस्ट्रो हगेरियन साम्राज्य की सत्ता के विरुद्ध विद्रोह किया।

प्रथम विश्वयुद्ध के उपरांत राष्ट्रसंघ और द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना इस बात का सबूत है कि आज का मानव–समाज मूलतः राष्ट्रनिर्मित है। आधुनिक युग में राष्ट्र ही लोक–जीवन का सर्वमान्य, सर्वप्रचलित रूप है। समाज से वैमनस्य समाप्त करने और मानव की रचनात्मक प्रतिभा को स्वतन्त्र और अक्षुण्ण अभिव्यक्ति के लिए आधुनिक समाजशास्त्रियों, राजनेताओं और राजनीतिज्ञों ने जो विभिन्न योजनाएँ बनाई है, वे वस्तुतः राष्ट्रवाद के सिद्धांत से ही सर्वाधिक प्रभावित है।

सोवियत संघ ने इतिहास के विकासक्रम की दृष्टि से पूँजीवाद की अपेक्षा उच्चस्तरीय समाजवादी आधार पर अपने यहाँ की अर्थव्यवस्था का परिशोधन किया। लेकिन इसने भी राष्ट्रवादी सिद्धांतो की मान्यता दी है, यह स्वयं ही राष्ट्रीय गणतंत्रों का संघ है। अत्यंत साहसिक विचार वाले मार्क्सवादियों ने भी विश्व–समाज के भविष्य के बारे में यही सोचा है कि यह समाजवादी राष्ट्रों का संघ होगा।

आधुनिक युग में राष्ट्रवादी भावों की प्रधानता

इस तरह राष्ट्र ही आज का युग सत्य है, और राष्ट्रीयता मानवमात्र की मूल भावना। विज्ञान और औद्योगिकी जिसे वस्तुनिष्ठ शास्त्रों के परे अर्थ, राजनीति और संस्कृति के अन्यान्य क्षेत्रों में इधर जो आंदोलन हुए हैं वे सजग राष्ट्रीयता की भावना से ही उत्प्रेरित हुए हैं, चाहे इन आंदोलनों का संगठन राष्ट्रों ने अपनी स्वतंत्रता और संस्कृति की रक्षा और पुष्टि के लिए किया हो, या दूसरे राष्ट्रों की बे स्वतंत्रता और संस्कृति के अपहरण के लिए।

समाजवादी या पूँजीवादी आधार भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पष्ठभूमि पर मानवता के एकीकरण और सारे संसार के नवनिर्माण आदि के आधुनिक कार्यक्रमों के लिए भी राष्ट्रों को ही सर्वप्रधान इकाई माना गया है।

भारतीय राष्ट्रवाद के उद्भव और विकास का अध्ययन

भारतीय राष्ट्रवाद अर्वाचीन तथ्य है। ब्रिटिश शासन और विश्व–शक्तियों के कारण तथा भारतीय समाज में उत्पन्न और विकसित अनेक भावनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ कारकों की क्रिया प्रतिक्रिया के फलस्वरूप ब्रिटिशकाल में भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म हुआ।

राष्ट्रवाद के सामान्य अध्ययन की दृष्टि से भारतीय राष्ट्रवाद के आविर्भाव और उत्थान का अपना विशिष्ट स्थान है। भारत में राष्ट्रीयता के विकास की प्रक्रिया बड़ी जटिल और बहुमुखी है। उसके अनेक कारण हैं। अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत की सामाजिक संरचना कई अर्थों में अद्वितीय थी। यहाँ की अर्थव्यवस्था का आधार यूरोपीय देशों के मध्ययुगीन प्राक्पूँजीवादी समाजों से भिन्न था।

भारत विभिन्न भाषाओं विभिन्न धर्मों और बड़ी आबादी वाला बहुत बड़ा देश है। आबादी का लगभग दो तिहाई भाग हिंदु है और हिंदु–समाज विभिन्न जातियों उपजातियों में विभक्त है। फिर हिंदुत्व कोई समशील धर्म भी नहीं, वरन् बहुत सारी उपासना–पद्धतियों की संगुटिका है जिसने इसे अलग–अलग संप्रदायों में बाँट रखा है।

भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की पृष्ठभूमि की यह खासियत है कि विशेषतः हिन्दु– समाज और सामान्यतः समस्त भारतीय–समाज खंडित और विभाजित रहा है। किसी भी अन्य देशों में राष्ट्रवाद का उदय ऐसी नितांत शक्तिशाली परंपराओं और संस्थाओ के संदर्भ में नहीं हुआ। भिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचना एवं धार्मिक परंपरा, अत्यन्त विस्तृत भूभाग, बढती हुई जनसंख्या इन कारणों से भारतीय राष्ट्रवाद के उद्भव और उत्थान का अध्ययन काफी कष्टसाध्य है लेकिन इसीलिए रोचक और उपयोगी भी।

संसार के किसी भी अन्य देश की अपेक्षा भारत में भूतकालीन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना की आत्मरक्षात्मक इच्छाशक्ति अधिक प्रबल रही है। भारत के राष्ट्रीय आंदोलन का महत्त्व मानव इतिहास के वर्तमान और भविष्य के लिए यों भी बहुत अधिक है। राष्ट्रीयता का आंदोलन मानव समाज के बहुत बड़े अंश का आंदोलन है और दिन प्रतिदिन अधिक गतिशील और गत्यात्मक होता जा रहा है।

भारतीय राष्ट्रवाद के बार में एक अन्य रोचक तथ्य यह है कि इसका आविर्भाव राजनीतिक पराधीनता के दिनों में हुआ। पूर्ववर्ती राष्ट्र ब्रिटेन ने अपने स्वयं के हित में भारतीय समाज के आर्थिक ढाँचे का आमूल–चूल परिवर्तन कर दिया, केंद्रीभूत राज्य–व्यवस्था की स्थापना की, आधुनिक शिक्षापद्धति की नींव डाली, आवागमन के नए साधन और ऐसी अन्य संस्थाओं का निर्माण किया। इसके फलस्वरूप नए सामाजिक वर्गों का जन्म हुआ और अपने आप में अद्वितीय नई सामाजिक शक्तियों का उन्मोचन संभव हो सका।
ये नए सामाजिक तत्त्व अपनी अपरिहार्य प्रकृति के कारण ब्रिटिश साम्राज्यवाद से टकराए और भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की आधारशिला ही नहीं, उसके लिए प्रेरणा स्रोत भी सिद्ध हुए। इस तरह भारतीय राष्ट्रवाद जटिल और विशिष्ट सामाजिक पृष्ठभूमि में जन्मा और सयाना हो रहा है।

निष्कर्ष

सामाजिक अस्तित्व के पूर्ववर्ती काल के अराष्ट्रिय जन–समुदाय से आधुनिक युग के राष्ट्र अपने निम्नलिखित गुणों के कारण भिन्न हैं, राष्ट्र के सारे सदस्य किसी निश्चित भूभाग में एक ही अर्थतन्त्र के अन्तर्गत परस्पर जैविकरूप से सम्पृक्त होते हैं, जिसके फलस्वरूप उनमें सम्मिलित आर्थिक अस्तित्व का भाव होता है, वे प्रायः एक ही भाषा का प्रयोग करते हैं, उनकी एक–सी मनोवैज्ञानिक संरचना और उससे विकसित सार्वजनिक लोक–संस्कृति होती है। ऐसा आदर्श राष्ट्र जो पूर्णतः विकसित हो और जिसमें ये सब गुण विद्यमान हों भावात्मक कल्पना मात्र है, क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र के अर्थतन्त्र सामाजिक संगठन, चिंतन प्रकृति और सम्मृति में अतीत के तत्त्व विभिन्न अंशो में उत्तरजीवी रहे हैं। फिर भी सोलहवीं सदी से ही मानव इतिहास के विशाल रंगमंच पर राष्ट्रगत सम्मेलन को विभिन्न अवस्थाओं में राष्ट्रीय जन–समुदायों का आविर्भाव होता रहा है।

संदर्भ–ग्रन्थ–सूची

1. समाजशास्त्र : विवेचना एवं परिप्रेक्ष्य : राम आहूजा
2. समाजशास्त्रीय विचारक : आर.के. मुखर्जी / मुस्तफा हुसैन
3. उच्चतर समाजशास्त्रीय सिद्धांत : रावत प्रकाशन
4. भारतीय समाज : राम आहूजा
5. आधुनिकता एवं उत्तर आधुनिकता : दोषी एवं त्रिवेदी
6. भारतीय सामाजिक विचारक : आर.के. मुखर्जी
7. भारतीय परंपराओं का आधुनिकीकरण : योगेन्द्र सिंह
8. भारतीय समाज एवं संस्कृति : नदीम हसनैन
9. भारतीय सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन : के.एल. शर्मा